Date
Page No.

-: राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद :-

Explanation :-

(1)

जब परशुराम गुस्सा करके रामचंद्र को कुछ बोलते है, इसी समय मे प्रभुजी रामचंद्र नम्र के भाव से प्रभु परशुराम जी को कहते है, हे नाथ शिवजी के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई एक दास ही होगा, क्या आज्ञा है मुझसे क्यों नही कहते, यह सुनकर क्रोधी मुनी गुस्से मे बोले सेवक वही कहलाता है जो सेवा का काम करे, शत्रुता का काम करके तो लड़ाई ही मोल ली जाती है जिसने धनुष तोड़ा है वह मेरा सेवक नही शत्रु है, हे राम जिसने शिवजी के धनुष को तोड़ा है वह सहस्र बाहू के समान मेरा शत्रु है, वह इस राज समाज को छोड़कर अलग हो जाए, नही तो सभी राजा मारे जाएगे,

मुनी के ऐसे क्रोध पूर्ण बचन सुनकर लक्ष्मण हसते हसते हुए बोल रहे है हे स्वामी बचपन मे हमने ऐसी-ऐसी बहुत सी धनुष तोड़ डाली है, किंतु आपने ऐसा क्रोध कभी नही किया, इसी धनुष पर आपकी इतनी ममता किस कारण से है, यह सुनकर परशुराम जी क्रोधीत हो उठे, अरे राजा पुत्र लक्ष्मण काल के वस मे होने के कारण तेरे मुह से होस पूर्वक बचन नही निकल रहे है,

(2)

लक्ष्मण हँसकर परशुराम से बोले, हे देव सूनिए हमारी जान मे तो सब धनुष एक से ही होते है, फिर इस पुराने धनुष को तोड़ने मे किसी को हानी क्या और लाभ क्या होता है, रामजी ने भी इस धनुष को धोखे मे तोड़ा था, हे मुनी, यह धनुष तो छूते ही टूट गया, ~~इ~~ इसमे प्रभू राम जी का कोई भी दोष नही है, इसलिए आप बिना बात करके क्यो गुस्सा करते है, लक्ष्मण के यह वचन सुनकर परशुराम जी ने अपने फरसे की ओर देखते हुए बोले अरे मूर्ख लगता है तुमने मेरे स्वभाव के बारे मे कुछ नही सूना, मै तुझे बच्चा मानकर तेरा वध नही कर रहा हूँ, तूने तो मुझे मूनी ही मान लिया, मै बचपन से ही ब्रह्मचारी हूँ मैं स्वभव से प्रचंड क्रोधी हूँ, सारे संसार को पता है, मै क्षत्रियो के कूल का शत्रु हूँ मैने अपने भुजाओ के बल पर अनेक बार पृथ्वी को सारे राजाओ से रहित कर रखा है, अर्थात मै धरती के सारे राजाओ का वध कर चूका हूँ, और

पृथ्वी को जीतकर ब्राह्मण को दान कर चुका हूँ, हे लक्ष्मण मेरे फरसे की ओर देख इसमे सहस्र बाहू की भुजाओ को काट डाला था, अरे राजा-पुत्र लक्ष्मण तू मुझसे भीड़कर अपने माता-पिता को चिंता मे मत डाल, अपनी मौत को खुद मत बुला, मेरा फरसा बहुत भयंकर है, यह गर्भ मे भी पल रहे बच्चो का नास कर डालता है,

(3)

लक्ष्मण जी हँसकर कोमल वाणी से बोले मुणी श्रेष्ठ आप अपने को बड़ा भारी योद्धा समझते है, बार-बार मुझे फरसा दिखाते है, फुँक से पाहाड़ उड़ाना चाहते है, जो तर्जनी उगँली को देखते ही मर जाती है। कुठार और धनुष देखकर ही मैने कुछ अभिमान सहित कहा था, भृगुवंशी समझकर जो कुछ आप कहते है, उसे मैं क्रोध को रोककर सह लेता हूँ, देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गौ, इनपर हमारे कुल मे वीरता नही दिखाई जाती है, क्योकि इन्हे मारने से पाप लगता है, और इनसे हार जाने पर अपकीर्ति लगती है, इसलिए आप मारे तो भी आपके पैर ही परना चाहिए, आपका एक ही वचन ही करोड़ो बज्रों के समान है, धनुष-बाण और कुठार तो आप व्यर्थ ही धारण करते है, इन्हे देखकर मैने कुछ अनुचित कहा हो तो उसे महामुनी क्षमा कीजिए, यह सुनकर भृगुवंश मणी परशुराम जी क्रोध के साथ गंभीर वाणी बोले।

(4)

हे विश्वामित्र सुनो, यह बालक बड़ा कुटिल है और कुबुद्धी है, काल के वश होकर यह अपने काल का घातक बन रहा है, यह सूर्यवंश रूपी पूर्णचंद्र का कलंक है, यह बिल्कुल उद्दण्ड, है मूर्ख और निडर है, अभी पल भर मे यह काल का ग्रास हो जाएगा, मैं पुकार कर कह देता हूँ, फिर मुझे दोष नही देंने, यदी तुम इसे बचाना चाहते हो तो हमारा प्रताप बल और क्रोध बतलाकर इसे मना कर दो, लक्ष्मण जी ने कहा मुणी आपका सुयश आपके रहते दुसरा कौन वर्णन कर सकता है, अपने ही मुह से अपनी करनी अनेको बार बहुत प्रकार से वर्णन की है इतने पर भी संतोष न हुआ तो फिर कुछ कह डालिए, आप विरता का व्रत धारण करने वाले धैर्यवान और क्षोभरहित है, गाली देते शोभा नही पाते, सुरवीर तो युद्ध में सूर वीरता का प्रदर्शन करते है, कहकर अपने

नहीं जानो, शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर कायर ही अपने प्रताप की डिंग मारा करते हैं,

(5)

आप तो मानो काल को हाँक लगाकर बार-बार उसे मेरे लिए बुलाते हैं, लक्ष्मण जी के कठोर वचन सुनते ही परशुराम जी ने अपने भयानक फरसे को सुधार कर हाथ में ले लिया और बोले अब लोग मुझे दोष न देना, ये कड़वा बोलने वाला बालक मारे जाने के लिए योग्य है, इसे बालक देखकर मैंने बहुत बचाया, पर अब यह सचमुच सबने को ही आ गया है, विश्वामित्र जी ने कहा अपराध क्षमा कीजिए, बालकों के दोष और गुण को साधु लोग नहीं गिनते, परशुराम जी बोले मैं दया रहित और क्रोधी हूँ, और यह गुरुद्रोही और अपराधी मेरे सामने उत्तर दे रहा है, इतने पर भी मैं इसे बिना मारे छोड़ रहा हूँ, विश्वामित्र केवल तुम्हारे प्रेम से ही नहीं तो इसे इस कठोर कुठार से काटकर थोड़े ही परिश्रम से गुरु से उऋण हो जाता, विश्वामित्र जी ने हँसकर कहा परशुराम तो हरा-हरा अर्थात सर्वत्र विजय होने के कारण राम लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं, किंतु मुनी वे नासमझ बने हुए हैं, इनके प्रभाव को नहीं समझ रहे हैं, वे यह नहीं जानते की राम लक्ष्मण सामान्य वीर ना होकर बहुत बड़े पराक्रमी योद्धा हैं,

(6)

लक्ष्मण जी ने कहा हे मुनी आपके प्रेम को कौन नहीं जानता, वह संसार भर में प्रसिद्ध है, अब आप पर गुरु का ऋण शेष बचा है, उसे उतारने की चिंता आपके मन में है, वो मानो शायद हमारे ही माथे काढ़ना चाहते हैं, बहुत दिन बीत गए मुझे मारकर आप शायद गुरु ऋण उतारना चाहते हैं, आप किसी हिसाब करने वाले को बुला लाइए तो मैं तुरंत थैली खोलकर दे दूँ, लक्ष्मण जी के कड़वे वचन सुनकर परशुराम जी ने कुठार संभाला, सारी सभा हाय-हाय करके पुकार उठी, लक्ष्मण जी बोले हे ब्राह्मण, देवता हार में ही बड़े हैं, और मुझे अपना फरसा दिखा रहे हैं, यह सुनकर सभा में उपस्थित लोग अनुचित है - अनुचित है कहने लगे, तबभी रघुनाथ जी ने इशारे से लक्ष्मण जी को रोक लिया, परशुराम जी के क्रोध रूपी अग्नि को बढ़ते देखकर रघुकुल के सूर्य श्री रामचंद्र जी, जल के समान शांत करने वाले वचन बोले,

Date
Page No.

: कवि परिचय :

तुलसीदास :-

तुलसी रस सिद्ध कवि है, उनकी काव्य भाषा रस की खान है, इनका जन्म उत्तर प्रदेश के जिले के राजपूर गाँव मे हुआ था, गुरू कृपा से उन्हें राम भक्ति का मार्ग मिला, वे मानव मूल्यों के उपासक कवि थे, राम भक्ति परम्परा मे तुलसी अतुलनीय है, उनके प्रमुख रचना मे रामचरितमानस, कविता वली, गीता वली, विनय पत्रिका आदि है,

: प्रश्न - अभ्यास :

Q1- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

Ans- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने निम्नलिखित तर्क दिए :

(i) बचपन में हमसे कितने ही धनुष टूटे परन्तु आपने उनपर कभी क्रोध नही किया, इस विशेष धनुष पर आपकी क्या ममता है?

(ii) हमारी नजर मे तो सब धनुष एक समान होते है, फिर इस धनुष पर इतना हो-हल्ला क्यो,

(iii) इस पुराने धनुष को तोड़ने से हमें क्या मिलना था?

(iv) राम ने तो इस धनुष को छुआ ही था की यह अपने आप ही टूट गया, इसमे राम को कोई दोष नही।

Q2- परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई उनके आधार पर दोनो के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए,

Ans- राम स्वभाव से कोमल और विनयी है, उनके मन में बड़ो के प्रति श्रद्धा और आदर है, वे गुरू के सामने झुकना अपना धर्म समझते है, वे महाक्रोधी परशुराम के बेबात क्रोध होने पर भी स्वंय को उनका दास कहते है, इस प्रकार वे परशुराम का दिल जीत लेते है,

लक्ष्मण राम से एकदम विपरित है, वे बहुत उग्र और प्रचंड है, उनकी जबान छूरी से भी अधिक तेज है, वे व्यंग्य वचनो से परशुराम को छलनी-छलनी कर देते है। उनकी उग्रता और कठोर वचनों को सुनकर ना केवल परशुराम भड़क उठते है बल्कि अन्य सभाजन भी उन्हें अनुचित कहने लगते है, वास्तव मे राम छाया है तो लक्ष्मण धूप, राम सितल जल है तो लक्ष्मण आग,

Q3. लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

Ans. लक्ष्मण - परशुराम जी हमने बचपन में ऐसे कितने धनुष तोड़ डाले, आपने तब तो क्रोध नहीं किया फिर इसपर इतनी ममता क्यों

परशुराम - अरे राजकुमार लगता है तेरी मौत आई है, तभी तो तू संभल कर बोल नहीं पा रहा है, तू शिव धनुष को आम धनुष के समान समझ रहा है।

लक्ष्मण - हमने तो यही जाना था कि सभी धनुष एक समान होते हैं, फिर राम ने तो इस पुराने धनुष को तो छुआँ भर था कि यह दो टुकड़े हो गए, इसमें राम का क्या दोष?

परशुराम - विश्वामित्र यह बालक तो बहुत मूर्ख कुलनाशक और कुल कलंक है, मैं तुम्हें कह रहा हूँ कि इसे रोक लो, इसे मेरे प्रताप और प्रभाव के बारे में बताओ, वरना यह मारा जाएगा।

Q4. परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न पद्यांश के आधार पर लिखिए -

बाल ब्रह्मचारी अति कोही, बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही, बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥
सहसबाहु भुज छेदनिहारा, परसु बिलोकु महीपकुमारा ॥

मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर ।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥

Ans. परशुराम ने अपने बारे में कहा 'मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ' स्वभाव से बहुत क्रोधी हूँ, सारा संसार जानता है कि मैं क्षत्रियों के कुल का शत्रु हूँ मैंने अनेक बार अपने भुजाओं के बल पर धरती के सारे राजा मार डाले हैं, और यह पृथ्वी ब्राह्मणों को दान दी है मेरा फरसा बहुत भयानक है।

Q5. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई ?

Ans. लक्ष्मण ने वीर योद्धा के बारे में बताया कि सच्चा वीर रण भूमि में वीरता दिखलाता है, अपना गुणगान नहीं करता। सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।

Q6. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

Page No.

Ans- यह बात सत्य है कि साहस और शक्ति तभी तक अच्छे लगते हैं जब तक साहसी व्यक्ति विनम्र रहे, वैसे ही शक्तिशाली व्यक्ति उद्दंडता करता है या हानि दिखाता है वो बुरा लगने लगता है। परशुराम और लक्ष्मण दोनों के उदाहरण सामने है, परशुराम पराक्रमी है किंतु उसका स्वयं को महापराक्रमी कहना बालब्रह्मचारी घातक कहना बुरा लगता है, जैसे-जैसे वो अपने कुठार को सुधारता है और वचन कड़वा करता चला जाता है, वैसे-वैसे वो वह हंसी का पात्र बनता चला जाता है। लक्ष्मण का साहस हमें भला लगता है, परंतु, वह भी सिमा तोड़ देता है, धीरे-धीरे वह बहुत उग्र, कठोर और उद्दंडत हो जाता है, इस कारण सभी सभाजन उसके विरुद्ध हो जाते हैं, लक्ष्मण की उद्दंड शक्ति हमें खटकने लगती है, दूसरी ओर राम चंद्र साहस और शक्ति के साथ विनम्रता का भी परीचय देते हैं, इसलिए वह सबका हृदय जीत लेते हैं।

Q7- भाव स्पष्ट कीजिए :-

(क) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी, अहो मुनीसु महा भट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू, चहत उड़ावन फूंकि पहारू ॥

Ans- इन पंक्तियों में लक्ष्मण अभिमान में चूर परशुराम स्वभाव पर व्यंग्य किया है, लक्ष्मण मुस्कुराते हुए कहते हैं कि आप मुझे बार-बार इस फरसे को दिखाकर डरा रहे हैं, ऐसा लगता है मानो आप फूंक मारकर पहाड़ उड़ाना चाहते हों।

(ख) इहां कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं, जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥
देखि कुठारू सरासन बाना, मैं कछु कहा सहित अभिमान ॥

Ans- इन पंक्तियों में लक्ष्मण ने परशुराम के अभिमान को चूर करने के लिए अपनी वीरता को बताया है, वे कहते हैं कि इस कुम्हड़े के कच्चे फल नहीं है जो तर्जनी के दिखाने से मुरझा जाता है, यानी वे कमजोर नहीं है जो धमकी से भयभीत हो जाएं, वह यह बात उनके फरसे को देखकर बोल रहे हैं, उन्हें स्वयं पर विश्वास है।

(ग) गाधिसू नु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ॥

Ans- इन पंक्तियों में विश्वामित्र मन ही मन मुस्कराते हुए सोच रहे हैं कि परशुराम

ने सामान्य क्षत्रियों को युद्ध में हराया है तो इन्हें हरा-ही-हरा नजर आ रहा है, ~~परशुराम इन्हें गन्ने~~ राम-लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय नहीं हैं, परशुराम इन्हें गन्ने की बनी तलवार के समान कमजोर समझ रहे हैं पर असल में ये लोहे की बनी तलवार हैं, परशुराम के अहंकार और क्रोध ने उनकी बुद्धि को अपने वश में ले लिया है।

Q8. पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

Ans.
(i) यह काव्यांश तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस के बालकांड से ली गयी जो अवधी भाषा में लिखी गयी है,
(ii) इसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग भरपूर मात्रा में किया गया है,
(iii) इसमें दोहा, छंद, चौपाई का अच्छा प्रयोग किया है,
(iv) भाषा में लयबद्धता है,
(v) प्रचलित मुहावरे और लोकोक्तियों ने काव्य को सजीव बनाया है।
(vi) वीर और रौद्र रस का प्रयोग मुख्य से रूप किया गया।
(vii) कहीं-कहीं शांत रस का भी उपयोग हुआ है,
(viii) अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा व पुनरुक्ति अलंकार का सुयोजित ढंग से प्रयोग हुआ है,
(ix) व्यंग्यों का प्रयोग अनूठा है,
(x) प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है,

Q9. इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है, उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए,

Ans. तुलसीदास द्वारा रचित परशुराम-लक्ष्मण संवाद मूल रूप से व्यंग्य काव्य है। उदाहरण के लिए :-

(i) बहु धनुही तोरी लरिकाईं,
कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं

(i) "लक्ष्मण परशुराम से कहते हैं कि हमने बचपन में भी इस जैसी कई धनुहियाँ तोड़ी हैं परन्तु तब आप इस पर इतने क्रोधित नहीं हुए।

(ii) परशुराम जी क्रोधित होकर लक्ष्मण से कहते हैं कि अरे राजा के बालक! तू अ...
माता-पिता के बारे में सोचा यह जो मेरा फरसा बहुत भयानक है, यह गर्भ...

पल रहे बच्चों का भी नाश कर देता है,

(iii) परशुराम द्वारा की जा रही खुद की बड़ाई को लक्ष्मण अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनाना कहते हैं।

(iv) लक्ष्मण कहते हैं कि आपका सामना कभी योद्धाओं से नहीं हुआ इसलिए आप घर के शेर हैं।

Q10 निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए :

(क) बालकु बोलि बधौं नहि तोही,
Ans: 'ब' की आवृति के कारण अनुप्रास अलंकार है, 'ह' की भी आवृति है।

(ख) कोटी कुलिस सम बचनु तुम्हारा।
Ans: उपमा : कोटी कुलिस (वज्र) के समान बचना,
अनुप्रास : कोटी कुलिस

(ग) तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा,
बार बार मोहि लागि बोलावा।।
Ans: उत्प्रेक्षा : तुम मानो काल को हाँक कर ला रहे हो
पुनरुक्ती : बार - बार।

(घ) लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु,
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु।।
Ans: उपमा : लखन उतर आहुति सरिस (लक्ष्मण के उत्तर आहुति के समान थे।
जल सम बचन (बचन जल के समान थे,)
रूपक : भृगुबरकोपु कृसानु (क्रोध रूपी आग),

Multiple Choice Questions (MCQ) :-

परशुराम ने किसके प्रेम के कारण लक्ष्मण का वध नहीं किया? विश्वामित्र के

1. परशुराम का स्वभाव कैसा था? क्रोधी

2. सहस्रबाहु की भुजाओं को किसने काट डाला था? परशुराम ने

3. परशुराम के वचन किसके समान कठोर हैं? वज्र के

4. शूरवीर अपनी वीरता कहाँ दिखाते हैं? युद्ध में

5. लक्ष्मण का यह कथन 'एक फूँक से पहाड़ उड़ाना' परशुराम के किस

6. गुण को दर्शाता है? अयोद्धा

जो सेवा का काम करे वो कौन कहलाता है? सेवक

7. किसके कहने पर परशुराम ने अपनी माता का वध कर दिया था? पिता के

8. परशुराम शिव को क्या मानते हैं? गुरु

9. लक्ष्मण ने परशुराम के किस स्वभाव पर व्यंग्य किया है? बड़बोलापन

10. परशुराम के अनुसार लक्ष्मण इनमें से क्या है? मूर्ख, कुबुद्धि, कुटिल

11. शूरवीर को अपनी शूरता ...... प्रदर्शित करनी चाहिए। युद्ध भूमि में

12. 'तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा' पंक्ति में निहित अलंकार .... उत्प्रेक्षा

13. परशुराम ने (गाधिसूनु) का प्रयोग किसके लिए किया है? विश्वामित्र के लिए

14. 'अयमय खाँड न ऊखमय' पंक्ति में अलंकार ...... है? श्लेष

15. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में किस छंद का प्रयोग हुआ है? चौपाई

16. व दोहा दोनों

परशुराम के सिर पर अभी किसका ऋण शेष था? गुरु का

17. लक्ष्मण ने ऋण चुकाने के लिए परशुराम से किसे बुलाने के लिए कहा?

18. हिसाब-किताब के जानकार को,

लक्ष्मण के शब्द परशुराम के लिए ..... थे? क्रोध रूपी अग्नि में घी की

19. आहुति के समान

राम के वचन परशुराम के लिए:- जल के समान शीतल थे,

20 इस संवाद में कौन-सा गुण है? ओज गुण,

21 राम-लक्ष्मण-परशुराम में किस रस की प्रमुखता है? वीर रस,

22 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में किस शब्द-शक्ति का प्रयोग है? व्यंजना,

23 तुलसीदास का जन्म कब और कहाँ हुआ था? तुलसीदास का जन्म सन् 1532 में उत्तर

24 प्रदेश के बांदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ,

तुलसीदास किस शाखा के प्रतिनिधि कवि थे? राममार्गी शाखा,

25 इनमें कौन सी रचना तुलसीदास की है? ~~रामच~~ रामचरितमानस

26 तुलसीदास के काव्य में किन-किन रसों की प्रधानता रही? शांत एवं करुण

27 तुलसीदास ने अपने काव्य में किस भाषा का प्रमुखता से प्रयोग किया?

28 अवधी भाषा,

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में किस घटना के कारण विवाद हो रहा है? शिवजी

29 के धनुष के टूटने के कारण

शिवजी के धनुष तोड़ने वाले की तुलना परशुराम ने अपने किस शत्रु से की है?

30 सहस्रबाहु,

'को छति लाभु जून धनु तोरे' यहाँ जून शब्द का क्या अर्थ है? जीर्ण,

31 राम ने धनुष किस धोखे से छू लिया था? कि धनुष एकदम नया है,

32 परशुराम ने अपनी भुजाओं के बल से .... कर दिया, धरती को क्षत्रियों से रहित,

33 तरजनी (तर्जनी) देखकर कौन मर जाता है? कुम्हड़बतिआ (छुई-मुई)

34 रघुकुल के लोग किन-किन पर दया करते हैं? ~~कुम्हड़बतिआ (छुई-मुई)~~

35 देवता, ब्राम्हण, ईश्वर के भक्त व गाय पर,

शिवजी का धनुष तोड़ने वाले को परशुराम अपना क्या समझते थे? शत्रु

36 जो सेवा का काम करे वो कौन कहलाता है? सेवक

37 किसके वश में आकर लक्ष्मण के मुंह से दोषपूर्वक वचन नहीं निकल रहे हैं?

38 काल,